

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 12, जर्मनी और अमेरिका में पीटिज्म

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह जर्मनी और अमेरिका में पीटिज्म पर सत्र 12 है।

ठीक है, हम यहाँ आगे की यात्रा करने जा रहे हैं। मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 13 पर हूँ, और आप देख सकते हैं कि व्याख्यान का शीर्षक व्याख्यान 6 है, चर्च में इंजील पुनरुत्थान। तो, सबसे पहले, इसके बारे में बस एक शब्द, और फिर मेरे पास एक बहुत लंबा, एक परिचय है जो वास्तव में एक बहुत लंबा परिचय है। तो, चर्च में इस इंजील पुनरुत्थान के बारे में बस एक शब्द।

चर्च के इतिहास में आप अक्सर यही देखते हैं कि यह एक तरह से पेंडुलम की तरह है। यह बस आगे-पीछे झूलता रहता है, और हमने अपने पिछले व्याख्यान में पेंडुलम को एक दिशा में झूलते देखा है। जब हम ज्ञानोदय के युग के धर्मशास्त्र के बारे में बात करते हैं तो ईसाई धर्म, चर्च, बाइबिल की शिक्षाओं आदि की कुछ बहुत ही गंभीर आलोचनाएँ होती हैं।

यहां तक कि कट्टरपंथी आलोचना जो कहती है कि यीशु कभी अस्तित्व में ही नहीं थे, आप जानते हैं, सुसमाचार 200 ई. में नहीं लिखे गए थे, और उन्होंने यीशु को आपके आदर्श व्यक्ति, अनुसरण करने के लिए आपके आदर्श व्यक्ति के रूप में बनाया, और इसी तरह। इसलिए, आलोचना काफी कट्टरपंथी हो गई, और ईसाई धर्म वास्तव में आलोचना के घेरे में आ गया। तो अब, जो हुआ है, वह यह है कि पेंडुलम फिर से झूलता है, इस इवेंजेलिकल पुनरुत्थान के साथ, चर्च के भीतर इस तरह के नवीनीकरण आंदोलन के साथ, चर्च को उसके पहले प्यार में वापस लाना, और इसी तरह।

तो, आप इस पेंडुलम को पाठ्यक्रम में आगे-पीछे झूलते हुए देखते हैं। यहाँ मुद्दा अभी भी, एक तरह से, चर्च की प्रकृति और विश्वासियों के समुदाय का मुद्दा है। तो, एक तरह से, इस व्याख्यान में, यह अभी भी चर्च विज्ञान ही है जो चीजों को चला रहा है, लेकिन हम एक तरह से चर्च को जीवंत होते हुए देखेंगे।

इसलिए, हम बस इस पर ध्यान देना चाहते हैं। अब, इस परिचय के साथ, कुछ ऐसी बातें हैं जो मैं परिचय के तौर पर कहना चाहूँगा। पहली बात जो मैं कहना चाहूँगा वह यह है कि यह काफी सामान्य बात लगती है कि चर्च में आत्मा की गतिविधियाँ अंततः समाप्त हो जाएँगी।

आत्मा के महान आंदोलन, चर्च में महान पुनरुत्थान, और चर्च को जीवन में लाने का महान तरीका अंततः शांत हो जाएगा। और हमने देखा है कि, फिर से, हमने पिछले व्याख्यान में देखा है कि, वे अपनी जीवन शक्ति खो देते हैं। वे चर्च के जीवन में आने वाली लगभग जड़ता, चर्च के जीवन में गति की कमी और चर्च के जीवन में आगे की सोच की कमी के कारण अपनी जीवन शक्ति खो सकते हैं।

या फिर वे घुटन के ज़रिए शांत हो सकते हैं, लोग चर्च का दम घोंट रहे हैं। तो, यह शांत होना या तो अंदर से या बाहर से आ सकता है, या यह दोनों जगहों से आ सकता है। फिर भी, आप इस तरह का शांत होना देखते हैं जो अक्सर यहाँ होता है, और फिर आप चर्च में क्षय के चक्र में आ जाते हैं।

और यह एक तरह की बुरी खबर बन जाती है। और हमने इसे कई जगहों पर होते देखा है। तो बस अपने आप को उन चार जगहों की याद दिलाइए जहाँ हमने ऐसा होते देखा है।

सबसे पहले, जर्मनी। जैसा कि हमने बताया, जर्मनी के साथ जो हुआ, वह मार्टिन लूथर की सहजता, कल्पनाशीलता और रचनात्मकता थी, जो दूसरी, तीसरी और चौथी पीढ़ी में स्थापित हुई। और यह एक तरह के तर्कवाद, एक जर्मन तर्कवाद में स्थापित हो गई।

इसलिए, हमने जर्मनी में ऐसा होते देखा। और जो बात ज़्यादा महत्वपूर्ण थी, वह ईसाई जीवन से ज़्यादा हठधर्मिता थी। बहुत से लोग चर्च के सभी हठधर्मिता जानते थे, लेकिन उन्हें ईसाई जीवन और ईसाई जीवन के बारे में कोई समझ नहीं थी और ईसाई अनुभव में किसी तरह की खुशी नहीं थी।

तो, हमने जर्मनी में ऐसा होते देखा। हमने इंग्लैंड में जो होते देखा, बस खुद को याद दिलाने के लिए, भगवान आपका भला करे, एक तरह का तर्कसंगत धर्म अंग्रेजी जीवन में बस गया था, एक ईश्वरवाद अंग्रेजी जीवन में बस गया था। और हमने देखा कि यह एक तरह से हुआ कि सिर हिल गया, लेकिन दिल अविचलित रहा।

फिर से, एक तरह की बुद्धिवादिता थी, एक तरह की विद्वत्तावादिता थी। लेकिन लोगों के दिलों और लोगों के जीवन में आत्मा की कोई हलचल नहीं थी और इसी तरह। इसलिए, हमने इंग्लैंड में ऐसा होते देखा।

हमने अमेरिका में ऐसा होते देखा है, बेशक, और हमने दूसरे दिन अमेरिका के बारे में यह व्याख्यान दिया, और हमने सभी से इस पर सहमत होने के लिए नहीं कहा। अमेरिका में जो हुआ उसके बारे में सोचें। निश्चित रूप से, एक बात जिस पर हम सहमत हो सकते हैं वह यह है कि अमेरिका में पहले जो प्यूरिटनवाद हमने देखा था, वह एक दमघोंटू जीवन में बदल गया।

प्रारंभिक प्यूरिटन यहाँ बहुत रचनात्मकता और कल्पना के साथ आए थे। वे बाइबिल पर आधारित थे। वे ऐसे स्थान स्थापित करने में बहुत रुचि रखते थे जहाँ ईश्वर का सम्मान हो और इसी तरह की अन्य बातें।

प्यूरिटनवाद दूसरी, तीसरी और चौथी पीढ़ी में स्थापित हो गया। इसलिए बाद की पीढ़ियाँ क्षय के एक बहुत ही तरह के चक्र में बस गईं जहाँ उनके लिए चीज़ें कमाना दिल और दिमाग से मसीह और राज्य के लिए जीवन जीने से ज़्यादा मायने रखता था। तो हमने देखा।

मैंने यह तर्क देने की कोशिश की कि आप भी देखें कि संस्थापक पिताओं के साथ, अमेरिकी जीवन में देववाद किस तरह से बस गया। लेकिन निश्चित रूप से, यह बस गया था। फ्रांस में, वास्तव में वह हुआ जिसे मार्क नोल ने ईसाई धर्म का उन्मूलन कहा है।

तो, फ्रांस वास्तव में, और मैं यहाँ मार्क नोल से उद्धरण देने जा रहा हूँ। मार्क नोल ने जो कहा, वह यहाँ है। फ्रांसीसी क्रांति के ईसाईकरण के प्रयासों द्वारा दर्शाए गए ईसाई धर्म के इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ यूरोपीय ईसाई धर्म के अंत या कम से कम अंत की शुरुआत थी या ईसाई धर्म की दुनिया में प्रमुख अभिव्यक्ति के रूप में ईसाई धर्म की प्रमुख अभिव्यक्ति थी।

इसलिए, मार्क नोल के लिए, फ्रांसीसी क्रांति एक वास्तविक मोड़ थी क्योंकि यह पश्चिमी दुनिया में ईसाईकरण के उन्मूलन का संकेत था। जैसा कि वे कहते हैं, यह दुनिया में ईसाई धर्म की प्रमुख अभिव्यक्ति के रूप में यूरोपीय ईसाई धर्म के अंत की शुरुआत थी। इसलिए फ्रांसीसी क्रांति के साथ यूरोपीय ईसाई धर्म, जिसमें फ्रांस अग्रणी है, निश्चित रूप से, यूरोपीय ईसाई धर्म एक तरह से स्थिर हो रहा है और ईसाई धर्म का प्रमुख रूप बनना बंद कर रहा है।

तो फ्रांस में जो हुआ वह वाकई क्रांतिकारी था, वाकई क्रांतिकारी, मेरा मतलब है कि एक तरह से यह वाकई एक ब्रेकिंग पॉइंट था। तो यह एक तरह से दुखद है। तो आज, उदाहरण के लिए, इंग्लैंड वापस जाकर, मैं 19वीं सदी का काफी अध्ययन करता हूँ।

सदी में इंग्लैंड में यह अनुमान लगाया गया है कि 19वीं सदी में इंग्लैंड में लगभग 65% आबादी चर्च जाती थी। और 19वीं सदी में इंग्लैंड में चर्च जाने वाले लोगों का एक बड़ा हिस्सा इंजीलवादी लोग थे जो खुद को इंजीलवादी मानते थे। वे लोग जो खुद को पुनरुत्थान के पक्षधर, इंजीलवादी और इसी तरह के अन्य लोग मानते थे।

आज, इंग्लैंड में, 150 साल बाद, यह अनुमान लगाया गया है कि इंग्लैंड की लगभग 3% आबादी चर्च जाती है। इसलिए इंग्लैंड वस्तुतः एक गैर-चर्च जाने वाला देश है। यह आश्चर्यजनक है कि 150 वर्षों में यह इतना मौलिक रूप से कैसे बदल गया है।

और यह पश्चिमी यूरोप का प्रतिनिधित्व करता है। पश्चिमी यूरोप में, चर्च जाने वाले लोगों का प्रतिशत बहुत, बहुत, बहुत कम है। मैं और मेरी पत्नी जुलाई में डेनमार्क में थे।

और डेनमार्क इसका एक अच्छा उदाहरण है। डेनमार्क में बहुत कम प्रतिशत लोग चर्च जाते हैं और वास्तव में चर्च जीवन, ईसाई जीवन में किसी भी तरह से शामिल होते हैं। अब, यह चर्च के लिए एक तरह की मिशनरी चुनौती के रूप में एक वास्तविक चुनौती हो सकती है, जिसमें कहा गया है कि हमें इन लोगों तक पहुँचने की आवश्यकता है।

इसलिए, चर्च को इससे प्रभावित होने के बजाय, इससे चुनौती मिल सकती है। और यह चर्च के लिए आगे बढ़ने का एक तरीका हो सकता है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि 17वीं सदी और 18वीं सदी की शुरुआत में जो कुछ हुआ, वह समस्याजनक हो गया।

ठीक है, एक और बात बता दूं: चर्च में, चर्च के इतिहास में, पुनरुत्थान या पुनरुत्थान आमतौर पर दो तरीकों में से एक से आता है। तो, आइए उन दो तरीकों का उल्लेख करें।

पाने का पहला तरीका नवीनीकरण है। वास्तव में, संभवतः तीन तरीके हैं, लेकिन जब आप इसके बारे में सोचते हैं, लेकिन पहला तरीका जिससे आप चर्च में नवीनीकरण पा सकते हैं वह करिश्माई नेताओं के माध्यम से है। आपको सही समय पर सही विचार के साथ सही व्यक्ति मिलता है।

और चर्च में उस नवीनीकरण का एक अच्छा उदाहरण, बेशक, मार्टिन लूथर रहा होगा। मार्टिन लूथर, सही व्यक्ति, सही समय, सही विचार। आपको यह बहुत ही करिश्माई व्यक्तित्व मिलता है, यह बहुत ही कल्पनाशील, रचनात्मक व्यक्तित्व चर्च को नया आकार देता है, चर्च में पुनरुत्थान और नया जीवन लाता है।

तो कभी-कभी आपको ऊपर से एक तरह का पुनरुत्थान मिलता है। और मार्टिन लूथर इसका एक अच्छा उदाहरण है। लेकिन दूसरा तरीका यह है कि अक्सर आपको नीचे से पुनरुत्थान मिलता है।

आपको आम लोगों के बीच करिश्माई नवीनीकरण आंदोलन से पुनरुत्थान मिलता है। परमेश्वर के लोगों के बीच करिश्माई नवीनीकरण आंदोलन एक साथ आना और चर्च में नया जीवन लाना है। और इसका एक अच्छा उदाहरण चर्च में करिश्माई आंदोलन है।

मुझे याद है कि मैं रोड आइलैंड में उस समय पढ़ा रहा था जब रोमन कैथोलिक चर्च में एक जबरदस्त करिश्माई आंदोलन शुरू हुआ था। और आम लोगों से, लोगों से, लोग चर्च को जीवंत करना चाहते थे, और वे एक साथ आए। बैरिंगटन कॉलेज में मेरे ऑफिस मेट, जहाँ मैंने विलय से पहले पढ़ाया था, लेकिन मेरा ऑफिस मेट एक करिश्माई एंग्लिकन पादरी था, जो बहुत दिलचस्प था।

और वह मुझे इन करिश्माई रोमन कैथोलिक बैठकों में ले जाता था। और यह बहुत दिलचस्प था। मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था।

मैं उस परंपरा में बड़ा नहीं हुआ। लेकिन जब मैंने रोड आइलैंड में करिश्माई नवीनीकरण आंदोलन के इस तरह के जीवंत अनुभव को देखा, तो यह वास्तव में देखने लायक था। और ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि उनके पास कोई करिश्माई व्यक्ति था जिसने कहा कि हमें चर्च को बदलना है या चर्च को जीवंत करना है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के लोगों ने कहा कि हम नए नियम की ईसाई धर्म की एक नई समझ चाहते हैं। इसलिए यह नीचे से आ सकता है। अब, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि कभी-कभी यह दोनों के साथ आता है।

यह एक करिश्माई नेता और सुसमाचार के प्रति सजग रहने वाले आम लोगों के साथ आता है। और जब आप इन दोनों चीजों को एक साथ लाते हैं, तो आपको एक विस्फोट मिलता है। इसलिए, मुझे लगता है कि शायद कोई तीसरा रास्ता भी हो सकता है।

लेकिन आमतौर पर, पुनरुत्थान ऐसे ही तरीकों से होता है। और हम इस व्याख्यान में इसे देखेंगे। ठीक है।

अब, अगर आप अपनी रूपरेखा देखें, और मैं इसे परिचय के तौर पर कहूंगा, तो हम जर्मनी तक पहुंचेंगे। लेकिन 17वीं और 18वीं सदी में तीन महान नवीनीकरण आंदोलन हुए। जर्मन आंदोलन था, जिसे, जैसा कि आप अपनी रूपरेखा में देख सकते हैं, पीटिज्म कहा जाएगा।

यहाँ हम हैं, और हम सबसे पहले पीटिज्म के बारे में बात करने जा रहे हैं। तो पुनरुत्थान का आंदोलन, जर्मनी में इंजील पुनरुत्थान आंदोलन, पीटिज्म कहलाता है। दूसरा, अमेरिकी आंदोलन था जिसे जागृति कहा जाता था।

और हम इस बारे में अलग से बात करेंगे। मेरा मतलब है, जाहिर है कि आप अपनी रूपरेखा से देख सकते हैं कि हम इनमें से प्रत्येक के बारे में अलग से बात करने जा रहे हैं। लेकिन अमेरिकी आंदोलन था जिसे जागृति कहा जाता था।

और तीसरा, अंग्रेजी आंदोलन था, जिसे वेस्लेयन रिवाइवल कहा जाता था। अब, ये, एक तरह से, समानांतर आंदोलन हैं। यह एक के बाद एक नहीं है।

वे एक ही समय पर चल रहे हैं। वे समकालीन आंदोलन हैं। और 18वीं सदी में फैलकर जर्मन लूथरन चर्च को जीवन दे रहे हैं, इंग्लैंड और अमेरिका में एंग्लिकन चर्च को जीवन दे रहे हैं, और अमेरिका में कई संप्रदायों को जीवन दे रहे हैं।

ठीक है, एक देश है जिसका हम यहाँ पूरी रूपरेखा में उल्लेख नहीं कर रहे हैं, और निश्चित रूप से, वह है फ्रांस। क्योंकि फ्रांस, फ्रांसीसी क्रांति के बाद, वस्तुतः ईसाई धर्म से विमुख हो गया। और फ्रांसीसी सरकार आज खुद को एक धर्मनिरपेक्ष सरकार कहती है।

इसीलिए आज फ्रांसीसी सरकार उन लोगों से लड़ रही है जो काम पर धार्मिक प्रतीक पहनना चाहते हैं। लेकिन फ्रांसीसी सरकार, अगर आप फ्रांसीसी सरकार के लिए काम करते हैं, तो आप काम पर धार्मिक प्रतीक नहीं पहन सकते। इसलिए वे इस बारे में थोड़ी लड़ाई में हैं।

लेकिन फ्रांस में हमें कोई पुनरुत्थान या नवीनीकरण आंदोलन नहीं मिला। ठीक है, तो सबसे पहले, यहाँ परिचय है। जर्मनी, अमेरिका और इंग्लैंड जाने से पहले क्या उस परिचयात्मक सामग्री के बारे में कुछ है? ठीक है, चलो जर्मनी चलते हैं।

आपको यहाँ अपनी रूपरेखा मिल गई है। आप देख सकते हैं कि रूपरेखा कुछ जगहों पर थोड़ी लंबी हो गई है, इसलिए मुझे उम्मीद है कि यह आपके लिए मददगार साबित होगी। लेकिन उस रूपरेखा को देखिए।

हम बी, जर्मनी के साथ जा रहे हैं, और हम जर्मनी में धर्मनिष्ठता के बारे में बात करने जा रहे हैं। ठीक है, जर्मनी में धर्मनिष्ठता की शुरुआत फिलिप स्पेनर से होती है। और यहाँ उनकी तिथियाँ हैं, फिलिप स्पेनर की तिथियाँ।

एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। ठीक है, फिलिप स्पेनर एक अच्छे लूथरन थे, और फिलिप स्पेनर ने कभी लूथरन चर्च नहीं छोड़ा। उनका लूथरन चर्च छोड़ने का कोई इरादा नहीं था।

वह हमेशा से लूथरन रहे हैं और उनका इरादा एक अच्छे लूथरन बनने का था। इसलिए, फिलिप स्पेनर जो करना चाहते थे, वह था सुधार सिद्धांतों के माध्यम से चर्च को जीवंत बनाना। तो यहाँ वे बातें हैं जिन पर फिलिप स्पेनर ने अपने मंत्रालय में जोर दिया।

फिर से, आप जानते हैं, उसने देखा कि चर्च एक तरह से सपाट हो गया था, एक तरह से मृत हो गया था। इसलिए, उसे लगता है कि अगर वह अपने मंत्रालय में इन बातों पर जोर देता है, तो यह चर्च को जीवन देगा, और निश्चित रूप से, ऐसा हुआ। लेकिन मैं चार बातों का उल्लेख करने जा रहा हूँ जिन पर उसने जोर दिया।

नंबर एक, अपने मंत्रालय में, उन्होंने सिर्फ धर्मोपदेश सुनने पर ही जोर नहीं दिया, बल्कि व्यक्तियों के एक बहुत ही व्यावहारिक भक्तिपूर्ण जीवन पर जोर दिया। नंबर दो, उन्होंने व्यक्तियों के जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन पर जोर दिया। फिलिप स्पेनर के लिए, अपने पिता या अपने दादा या अपनी माँ या अपनी दादी से अपने विश्वास को विरासत में लेना ही पर्याप्त नहीं है।

हर ईसाई, हर विश्वासी के जीवन में एक सच्चा, वास्तविक आध्यात्मिक परिवर्तन होना चाहिए। नंबर तीन, उन्होंने आम तौर पर इसे नया जन्म कहा। यह आध्यात्मिक परिवर्तन के बारे में बात करने का एक जाना-पहचाना तरीका था, जॉन के सुसमाचार की उस तरह की भाषा का उपयोग करना, फिर से जन्म लेना।

और चौथा, और यह सामान्य रूप से धर्मनिष्ठता के लिए सत्य होगा, लेकिन चौथा, उन्होंने पवित्रशास्त्र के अध्ययन पर जोर दिया। यह केवल धर्मग्रंथ का अध्ययन नहीं है क्योंकि आप धर्मोपदेश सुनते हैं, बल्कि आम लोगों के साथ भी धर्मग्रंथ का अध्ययन है। इसलिए भगवान आपको आशीर्वाद दें।

तो, उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने 1675 में एक किताब लिखी। मैंने किताब का शीर्षक नहीं लिखा। शायद मुझे लिखना चाहिए था, लेकिन उन्होंने 1675 में एक किताब लिखी थी।

और किताब का शीर्षक था पवित्र लालसाएँ। पवित्र लालसाएँ। और पवित्र लालसाएँ एक तरह से पिएटिस्ट आंदोलन की बाइबिल बन गई।

यह वह बन गया जो हर कोई चाहता था; यह एक तरह से बेस्टसेलर बन गया। यह एक ऐसी किताब बन गई जिसे हर कोई पढ़ता है, और हर कोई इसे अपने जीवन में लागू करता है। ये

जर्मनी के लूथरन चर्च के लोग हैं, लेकिन वे इसे पढ़ रहे हैं, वे इसे अपने जीवन में लागू कर रहे हैं, और उस किताब ने अंततः उस आंदोलन को शुरू करने में मदद की जिसे पिएटिज्म कहा जाता है।

अब, जब उस किताब ने धर्म-परायणता की शुरुआत की, तो याद रखें कि फिलिप स्पिनर और अन्य लोगों की तरह इन लोगों ने धर्म-परायणता और धर्म-परायण शब्द को अच्छे अर्थ में सोचा था। धर्म-परायणता एक अच्छी चीज है। यह एक अच्छा शब्द है।

धर्मपरायणता एक अच्छा शब्द है। मुझे पता है कि कभी-कभी लोग इस शब्द का नकारात्मक अर्थ में इस्तेमाल करते हैं, और शायद उन्होंने उस दिन भी ऐसा ही किया। आप कहते हैं, ओह, वह कितना पवित्र है, या वह कितनी पवित्र है।

मुझे लगता है कि कभी-कभी जब हम ऐसा कहते हैं, तो हमारा मतलब नकारात्मक होता है, आप जानते हैं। इन लोगों का मतलब यह था कि यह उपहास का शब्द नहीं था, बल्कि गले लगाने का शब्द था। इसलिए पवित्र लालसा आपको, पुस्तक के लिए उनके द्वारा चुने गए शीर्षक से, यह समझने में मदद करती है कि वह किस तरह के व्यक्ति थे।

अब, एक बार जब उन्होंने अपनी किताब लिख ली, तो आंदोलन शुरू हो गया। ठीक है? एक बार जब आंदोलन शुरू हो गया और वास्तव में पकड़ में आ गया, तो स्पिनर के तहत उस आंदोलन की कुछ विशेषताएं महत्वपूर्ण थीं। तो मैं उन विशेषताओं का उल्लेख करना चाहता हूँ जो आंदोलन को वास्तव में एक आंदोलन के रूप में दर्शाती हैं जो वास्तव में शुरू हुआ।

ठीक है। नंबर एक परमेश्वर के वचन पर केंद्रीय जोर है, जिसका प्रचार और अध्ययन दोनों किया जाता है। तो बाइबिल, आप बाइबिल को जीवंत बनाते हैं, और लोग जीवंत हो जाते हैं।

यही तो धर्मपरायणता का वास्तविक विश्वास है। बाइबल को जीवंत बनाओ, और लोग जीवंत हो उठेंगे। इसका मतलब यह था कि उपदेश जीवंत होना चाहिए, और बाइबल अध्ययन जीवंत होना चाहिए।

तो, यह, नंबर एक, जर्मनी में लूथरन चर्चों में किए जा रहे प्रचार के लिए एक तरह की चुनौती है क्योंकि जो प्रचार किया जा रहा था वह मृत, शुष्क, जरूरी नहीं कि पाठ्य-सामग्री वाला, अधिक शैक्षणिक, अधिक दार्शनिक था। एक आंदोलन के रूप में धर्म-सिद्धांतवाद उस तरह के लिए एक चुनौती बन गया। क्या हम इस तरह का प्रचार चाहते हैं? नहीं।

हम ऐसा प्रचार चाहते हैं जो परमेश्वर के वचन पर केन्द्रित हो, जो परमेश्वर के वचन को लोगों के दिलों और जीवन में जीवंत कर दे। और फिर हम चाहते हैं कि लोग बाइबल अध्ययनों में उस वचन का अध्ययन करें। तो यह पहली विशेषता है, और इसने वास्तव में लूथरन चर्च को जीवंत कर दिया।

ठीक है, आंदोलन की दूसरी विशेषता, वह व्यापक आंदोलन जिसे स्पेनर ने शुरू करने में मदद की, वह था सभी विश्वासियों का पुरोहितत्व। सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का नवीनीकरण, एक

ऐसा मुद्दा जिसे मार्टिन लूथर और जॉन कैल्विन ने उठाया था। ठीक है, और याद रखें, सभी विश्वासियों का पुरोहितत्व ऐसा नहीं है। ये लोग अच्छे लूथरन हैं, इसलिए सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का मतलब यह नहीं है कि हर कोई खड़ा होकर बाइबल से उपदेश दे सकता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि हर किसी के पास उपदेशक का पेशा नहीं है। इसका मतलब यह है कि आप एक दूसरे के लिए बहुत ही अद्भुत, सुंदर तरीकों से पुजारी बन सकते हैं। आप एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

लोग एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने के लिए आपको किसी पुजारी की ज़रूरत नहीं है। आप एक दूसरे को सलाह दे सकते हैं।

आपको एक दूसरे को सलाह देने के लिए किसी पुजारी की ज़रूरत नहीं है। आप एक दूसरे के पापों को, एक दूसरे के पापों को माफ़ कर सकते हैं। ऐसा करने के लिए आपको किसी पुजारी की ज़रूरत नहीं है।

इसलिए, याद रखें, सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व को व्यवसाय के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन ऐसे अद्भुत पुरोहितीय तरीके थे जिनसे लोग एक-दूसरे की सेवा कर सकते थे। यह नंबर दो है। नंबर तीन, और यह सामान्य रूप से धर्मनिष्ठता के लिए वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो गया।

पीटिज्म दिमाग और दिल का एक खूबसूरत विवाह था। पीटिज्म पूरे व्यक्ति, व्यक्ति के दिमाग, व्यक्ति के दिल का एक खूबसूरत तरह का जुड़ाव था। लूथरनवाद और विद्वत्तावाद केवल दिमाग का जीवन बन गए थे।

हठधर्मिता, सिद्धांत, दार्शनिक तर्क, यही लूथरनवाद बन गया था। पीटिज्म सामने आता है और कहता है, नहीं, इसे एक तरह से पूरे व्यक्ति, दिमाग और दिल को अपील करना है। अब, पीटिज्मों पर सिर्फ दिल, सिर्फ दिल के धर्म का आरोप लगाया गया।

ये लोग नहीं हैं, और वे मन के जीवन के बारे में चिंतित नहीं हैं। यह एक झूठा आरोप था। धर्मनिष्ठता, धर्मनिष्ठ आंदोलन, धर्मनिष्ठता का आंदोलन, मन और हृदय का एक सुंदर विवाह था।

यह झूठा आरोप है जो लोग लगा रहे थे। यह सच नहीं था। ये लोग बहुत बुद्धिमान और बड़े दिल वाले, साथ ही गर्म दिल वाले लोग थे।

तो, वहाँ एक सुंदर तरह का संबंध है। नंबर चार, इन लोगों के लिए चौथी विशेषता यह है कि हम विवाद में शामिल नहीं होने जा रहे हैं। धर्मनिष्ठता के आंदोलन ने कहा, एक अर्थ में, उन्होंने कहा, नेतृत्व ने कहा, हम विवाद में शामिल नहीं होते हैं।

हम कैथोलिकों या अन्य लूथरन या अन्य ईसाइयों के साथ धार्मिक लड़ाई नहीं करना चाहते। अगर हम असहमत हैं, तो हम प्यार से असहमत हैं। हम बस इतना ही करेंगे।

इसलिए, वे वास्तव में चल रही लड़ाइयों से बचना चाहते थे। इसलिए यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था। तो, ठीक है, और पाँचवीं विशेषता यह है कि उन्होंने मंत्रियों के प्रशिक्षण में क्रांतिकारी बदलाव किया।

उन्होंने मंत्रियों को प्रशिक्षित करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव किया। लूथरनवाद में जो हुआ था, उसके कारण, जर्मन लूथरनवाद में, मंत्रियों को केवल अकादमिक और बौद्धिक रूप से प्रशिक्षित किया जाता था। उन्हें केवल दार्शनिक रूप से प्रशिक्षित किया जाता था।

लेकिन धर्मनिष्ठ आंदोलन ने कहा कि हम अपने प्रशिक्षण में क्रांतिकारी बदलाव करने जा रहे हैं। और हम जो करना चाहते हैं वह है विद्वान और संत तैयार करना। हम सिर्फ विद्वानों की नकल नहीं करना चाहते।

हम ऐसा नहीं चाहते। हम विद्वानों और संतों को फिर से बनाना चाहते हैं। और इसलिए, धर्मनिष्ठता का प्रशिक्षण मन और हृदय के विवाह के बारे में उनके विश्वास को दर्शाता है।

मुझे खेद है, धर्मगुरुओं का प्रशिक्षण, मंत्रियों का प्रशिक्षण। इसलिए, उन्हें अपने स्वयं के विद्यालय बनाने पड़े। उन्हें अपने स्वयं के दिव्य विद्यालय बनाने पड़े, अपने स्वयं के जिन्हें आज हम सेमिनरी कहते हैं, लेकिन हम उन्हें यही कहते हैं।

लेकिन उन्हें प्रशिक्षण के लिए अपने खुद के स्थान बनाने पड़े। इसलिए यह यहाँ वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। ठीक है, और फिर नंबर छह धर्मनिष्ठता की विशेषता है, और वह यह है कि ये लोग वास्तव में अभी भी उपदेश देने पर जोर देते हैं।

धर्मपरायण परंपरा में उपदेश अभी भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, उपदेशित शब्द अभी भी महत्वपूर्ण है। लेकिन उस शब्द को एक शिक्षाप्रद शब्द होना चाहिए, न कि किसी तरह का दिखावटी शब्द, बल्कि यह शिक्षाप्रद शब्द होना चाहिए, ऐसा शब्द जो न केवल उपदेशक के ज्ञान को दर्शाता हो, बल्कि ऐसा शब्द जो लोगों के दिलों और लोगों के जीवन तक पहुंचे, वास्तव में उन्हें वहीं छू ले जहां वे हैं।

इसलिए धर्मोपदेश धर्मनिष्ठता के लिए महत्वपूर्ण हो गया। और, बेशक, यह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण था, यह धर्मोपदेश ही था जिसने लूथरन चर्च को जीवंत किया। इसलिए फिलिप स्पिनर, धर्मनिष्ठता के पिता की तरह, वह ही थे जिन्होंने इस चीज़ को आगे बढ़ाया।

फिर से, सही व्यक्ति, सही विचार, सही समय पर, सही प्रतिबद्धता के साथ, और आप चल पड़ते हैं। और धर्मनिष्ठता एक तरह से शुरू हो जाती है। ठीक है।

फिलिप और धर्मनिष्ठ आंदोलन के शुरू होने के बारे में कोई सवाल? ठीक है। हमने इसे पहले भी देखा है। अब हम इसे फिर से देख रहे हैं।

यह लगभग ऐसा है जैसे कि इन तरह के संस्थापकों के पास शिष्य हैं। हमने लूथर, लूथर और मेलानचथॉन, केल्विन और बेज़ा के साथ ऐसा देखा है। तो हमने पहले भी ऐसा देखा है, और यह पिएटिज्म के साथ हुआ।

ऑगस्ट फ्रैंक नाम का एक व्यक्ति था जो पिएटिज्म में शामिल हो गया, और वह पिएटिस्ट आंदोलन में शामिल हो गया। वह दूसरी पीढ़ी के पिएटिस्ट की तरह था, लेकिन वह उस दूसरी पीढ़ी का नेता बन गया। स्पिनर की तरह, वह भी लूथरन था।

इसलिए, यह इन लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उनका कभी भी लूथरन चर्च छोड़ने का इरादा नहीं था। उनका इरादा लूथरन चर्च में जान डालना है।

तो, स्पेनर की तरह, यह बात ऑगस्टे फ्रैंक के साथ भी सच थी। वह लूथरनवाद के भीतर ही रहे और लूथरनवाद में सुधार लाने की कोशिश की। ठीक है।

अब, उन्होंने कुछ योगदान दिए हैं, और मैं उनमें से तीन का उल्लेख करने जा रहा हूँ। मेरा मतलब है, स्पिनर ने इसे आगे बढ़ाया। स्पिनर ने अपनी किताब लिखी।

स्पिनर ने पादरी को प्रशिक्षित करने और अन्य काम शुरू करने में मदद की। लेकिन कुछ ऐसे काम भी थे जो फ्रैंक ने किए और मैं उनमें से तीन का जिक्र करना चाहता हूँ। फ्रैंक के लिए पहला काम था ईसाई धर्म का क्रियान्वयन।

उनका गृहनगर जर्मनी में लीपज़िग था, और उन्होंने चारों ओर देखा और पाया कि अनाथालयों की आवश्यकता थी, इसलिए उन्होंने अनाथालयों की स्थापना की। अब, जहाँ तक उनका सवाल है, यह यीशु की महान आज्ञा के अनुरूप है। यीशु की महान आज्ञा क्या है? अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्यार करो, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करो।

इसलिए, जहाँ तक फ्रैंक का सवाल है, यह पड़ोसी के प्रति प्रेम था। यह प्रेम से यीशु के आदेश का पालन करना था। और यह धर्मनिष्ठता, क्रियाशील ईसाई धर्म की बहुत विशेषता बन गई, जो पड़ोसी तक पहुँचती है, विशेष रूप से हमारे बीच सबसे गरीब लोगों तक।

तो यह फ्रैंक के माध्यम से विशेषता बन जाती है। ठीक है, दूसरी बात। उन्होंने एक कॉलेज ऑफ धर्मपरायणता, एक कॉलेज ऑफ धर्मपरायणता का गठन किया।

यह धर्मपरायणता का कॉलेज स्थानीय चर्चों में हर हफ़्ते मिलने वाले आम लोगों के छोटे-छोटे सेल समूह थे। इसलिए धर्मपरायणता का कॉलेज गॉर्डन या उस जैसी कोई संस्था नहीं थी, बल्कि यह वह था जिसे वह छोटे समूह कहते थे। और ये छोटे समूह एक साथ मिलते थे, और धर्मोपदेश के बारे में बात करते थे।

उन्होंने बाइबल का अध्ययन किया। उन्होंने एक साथ भजन गाए। उन्होंने एक-दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार करके और क्षमा प्राप्त करके अपने आध्यात्मिक जीवन को और भी गहरा किया।

लेकिन धर्मपरायणता का कॉलेज फ्रैंक की तरह का आविष्कार था। और यह उपदेश के लिए एक सुंदर संतुलन था। इसलिए उपदेश रविवार को होता है, और सप्ताह के दौरान आम लोग धर्मोपदेश के बारे में बात करने और अपने आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करने आदि के लिए एकत्रित होते हैं, धर्मपरायणता का कॉलेज।

ठीक है, और तीसरा, फ्रैंक ने वास्तव में इस कारण को आगे बढ़ाने में मदद की, या विश्वास द्वारा औचित्य के सिद्धांत को आगे बढ़ाया। विश्वास द्वारा औचित्य। क्योंकि विश्वास द्वारा औचित्य को लूथरन द्वारा एक सिद्धांत के रूप में तर्कसंगत बना दिया गया था जिस पर आपको बौद्धिक रूप से विश्वास करने की आवश्यकता है।

फ्रैंक ने विश्वास के द्वारा औचित्य के सिद्धांत को लिया और उसे वह जीवन दिया जो लूथर ने अपने समय में दिया था। लेकिन विश्वास के द्वारा औचित्य केवल एक लेन-देन से संबंधित नहीं है, बल्कि यह विश्वासी के जीवन में मसीह की जीवित उपस्थिति से संबंधित है। इसलिए उन्होंने विश्वास के द्वारा औचित्य के सिद्धांत को लिया और इसे एक अर्थ में, विश्वासी के जीवन में अंतर्निहित कर दिया।

उन्होंने विश्वासी के हृदय में और विश्वासी के जीवन में मसीह की उपस्थिति के बारे में भी बहुत कुछ कहा। इसलिए फ्रैंक दूसरी पीढ़ी के धर्मपरायण हैं, उनकी रुचि स्पेनर की तरह ही चर्च में जान डालने में है, लेकिन साथ ही इसमें कुछ आयाम भी जोड़ते हैं। इसलिए वह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

ठीक है, तीसरा व्यक्ति जिसे आप देख सकते हैं, वह सिर्फ एक नाम है जिसे मैं उच्चारण करना पसंद करता हूँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मेरा भी ऐसा ही नाम हो। मेरा ऐसा नाम क्यों नहीं हो सकता? काउंट निकोलस लुडविग वॉन ज़िंज़ेंडोर्फ।

मेरा मतलब है, एक नाम है। उसका पहला नाम क्या है? निकोलस। निकोलस लुडविग वॉन ज़िंज़ेंडोर्फ।

आपके लिए एक नाम है। तो क्या बढ़िया नाम है, है न? खैर, वह एक तीसरा धर्मपरायण व्यक्ति था जिसे हम याद रखना चाहते हैं, और आपको उसकी तिथियाँ वहाँ मिल गई हैं। अब, वह धर्मपरायणता में पला-बढ़ा था।

उनके स्पेनर के साथ संबंध थे, जो वास्तव में उनके गॉडफादर थे। इसलिए, स्पेनर से उनका संबंध है। और फ्रैंक उनके शिक्षक थे।

फ्रैंक वह व्यक्ति था जिसके अधीन उसने शिक्षा प्राप्त की, और उसने फ्रैंक के अधीन मंत्रालय के लिए सीखा। इसलिए, वह वास्तव में धर्मनिष्ठता में अच्छी तरह से शिक्षित था, और वह धर्मनिष्ठता को आगे बढ़ाने जा रहा है, उन चीजों पर जोर देते हुए जिनका हमने उल्लेख किया है और जिन पर जोर दिया गया है। ठीक है, वॉन ज़िंज़ेंडोर्फ के साथ, हालांकि, थोड़ा सा मोड़ है।

वॉन जिंज़ेंडोर्फ एक बहुत ही करिश्माई व्यक्ति थे, जो धर्मनिष्ठता की बातें सिखाते और उपदेश देते थे, लेकिन वे मोराविया नामक एक क्षेत्र में रहते थे, और उन्होंने अपने आसपास अनुयायियों का एक बड़ा समूह इकट्ठा किया। अब, ये अनुयायी शुरू में धर्मनिष्ठ थे। वे लूथरन चर्च को जीवंत कर रहे थे, आप जानते हैं? लेकिन वॉन जिंज़ेंडोर्फ स्पेनर से अलग हो जाता है और फ्रैंक से भी अलग हो जाता है, इस तरह वॉन जिंज़ेंडोर्फ अंततः लूथरन चर्च छोड़ देता है।

स्पेनर और फ्रैंक, एक अन्य पिएटिस्ट, लूथरनवाद को नहीं छोड़ रहे हैं। वे लूथरनवाद को अंदर से आकार दे रहे हैं। वॉन जिंज़ेंडोर्फ ने आखिरकार अपने अनुयायियों के साथ छोड़ने का फैसला किया, और उन्होंने अपने संप्रदाय को मोरावियन नाम दिया।

तो, अब यह एक विराम है। ऐसा होना ही है। यह आना ही है।

और अब अगर आप पाठ्यक्रम के बारे में सोचें, तो जब हमने पाठ्यक्रम में रोमन कैथोलिक चर्च से शुरुआत की थी, तो हमने बहुत सारे प्रोटेस्टेंट समूहों का गठन होते देखा है, है न? हमने लूथरन को देखा है। हमने एंग्लिकन को देखा है। हमने कांग्रेगेशनलिस्ट को देखा है।

हमने बहुत से बैपटिस्ट देखे हैं। खैर, अब हम देखते हैं कि मोरावियन नामक एक और संप्रदाय भी इसी से निकल रहा है। हाँ? ओह, हाँ।

मेरे पास वॉन जिंज़ेंडोर्फ की एक तस्वीर है जिसमें वे मसीह के प्रकाश में उपदेश दे रहे हैं। यह विभाजन कोई ज़बरदस्ती नहीं था। उन्हें जबरन बाहर नहीं निकाला गया या ऐसा कुछ भी नहीं था।

मुझे लगता है कि वॉन जिंज़ेंडोर्फ को यकीन हो गया था, और शायद मैं भी, केल्विन की तरह, थोड़ा-बहुत आश्चर्य था कि मैंने रोमन कैथोलिक चर्च नहीं छोड़ा है। रोमन कैथोलिक चर्च ने मुझे छोड़ दिया। मैंने लूथरन चर्च नहीं छोड़ा।

इसने मुझे मसीह के प्रकाश के प्रति वफ़ादार रहने के लिए छोड़ दिया, मुझे अपने लोगों को उपदेश देना है, और हमें यह करना है। इसलिए मुझे लगता है कि यह बहुत हद तक उसी तरह की बात थी। इसलिए कोई भी इसे मजबूर नहीं कर रहा था, और यह विवादास्पद नहीं था।

कोई भी इस पर जोर नहीं दे रहा है, लेकिन उन्हें लगता है कि अब समय आ गया है। उन्होंने मोरावियन आंदोलन के मुख्यालय के रूप में मोराविया में अपना खुद का स्थान स्थापित किया। यह एक बहुत मजबूत मिशनरी आंदोलन बन गया, इसलिए इसे मोराविया से शुरू किया गया, और इसका काफी व्यापक प्रभाव था।

यह जॉन वेस्ले पर भी प्रभावशाली था। तो, इसका काफी व्यापक प्रभाव था। हाँ, जेसी? हाँ।

ठीक है। नहीं, लूथरनवाद भीतर से बदल रहा है। यह वैसा ही है जैसे प्यूरिटन एंग्लिकनवाद को भीतर से बदल रहे हैं।

तो, लूथरनवाद अंदर से बदल रहा है। लूथरन के भीतर से एक नवीनीकरण आंदोलन चल रहा है। जिंजेंडोर्फ के लिए यह पर्याप्त नहीं है, मुझे नहीं लगता, शायद, है ना? इसके अलावा, वह एक तरह से भौगोलिक रूप से अन्य बड़े शहरों से अलग-थलग था, जहाँ पिएटिस्ट आंदोलन जोर पकड़ रहा था।

लेकिन मैं कहूँगा कि यह, हाँ, विवादास्पद नहीं है। जहाँ तक उनका सवाल है, यह एक तरह से स्वाभाविक विकास है। और उन्होंने यह नहीं देखा कि वे लूथरन चर्च को तोड़ रहे थे या ऐसा कुछ कर रहे थे।

हाँ। हमने ऐसा किया है, यह दिलचस्प है। मुझे आपकी सांप्रदायिक पृष्ठभूमि के बारे में नहीं पता, लेकिन मैं आखिरी दिन जानना चाहूँगा। लेकिन मैं पूरे कोर्स के दौरान तटस्थ रहने की कोशिश करता हूँ।

लेकिन अगर आप साझा करना चाहते हैं तो मैं आखिरी दिन यह जानना चाहूँगा। क्या आपमें से कोई मोरावियन है? नहीं, शायद नहीं। मुझे लगता है कि हमारे दो मोरावियन छात्र गॉर्डन में आए हैं।

हमने उन छात्रों से उनके अपने संप्रदाय और संप्रदाय से जुड़ी उनकी पृष्ठभूमि आदि के बारे में बहुत अच्छी बातचीत की। लेकिन मुझे संदेह है कि हमारे कैम्पस में कोई मोरावियन छात्र है या नहीं। क्या आप कैम्पस में किसी ऐसे मोरावियन छात्र को जानते हैं जो खुद को मोरावियन के रूप में पहचानता हो? नहीं।

खैर, ऐसा है; आपके पास इस तरह का उतार-चढ़ाव है। लेकिन मोरावियन एक बहुत ही मजबूत मिशनरी-उन्मुख आंदोलन बना हुआ है। लेकिन मुझे यकीन है कि मोरावियनवाद का एक हिस्सा है जो बहुत हद तक स्थिर है जो कि पिएटिस्ट आंदोलन द्वारा इसे बदलने से पहले लूथरन चर्च की तरह दिखता है।

क्योंकि समूह इसी तरह चलते हैं। लेकिन मैंने मोरावियन का अध्ययन नहीं किया है, इसलिए मुझे नहीं पता कि वे आज किस तरह के हैं। मुझे लगता है कि मोरावियनवाद का केंद्र पेंसिल्वेनिया में बेथलेहम और ऐसी ही जगहों पर है।

मुझे लगता है कि यह उनके जीवन का केंद्र है। कोई भी व्यक्ति अभी इसे खोज सकता है। मुझे पता है कि आप में से कुछ लोग अभी इसे खोज रहे होंगे।

भगवान आपका भला करे। लेकिन हाँ, मोरावियन। ठीक है, पिएटिज्म।

क्या आपको पिएटिज्म के बारे में कुछ पता है? आप जानते हैं, आप समझ गए होंगे कि क्या हो रहा है, है न? पेंडुलम वापस आ रहा है। और लूथरन चर्च का नवीनीकरण हो रहा है। शायद यही वह है जिसके बारे में आप कम ही जानते हैं।

संभवतः तीनों में से वह आंदोलन जिसके बारे में आप कम से कम परिचित हैं। हम दूसरे नंबर पर अमेरिका जा रहे हैं, और हम महान जागृति के बारे में बात करने जा रहे हैं। मैं पहले एक परिचय देने जा रहा हूँ, और फिर आपके पास यहाँ अपने बिंदु हैं।

लेकिन सबसे पहले, मैं अमेरिका में महान जागृति का परिचय देना चाहता हूँ। 18वीं और 19वीं सदी में अमेरिका में दो या तीन महान जागृति हुई थीं। तो चलिए मैं आपको बस यही समझाता हूँ।

तो, महान जागृति से मेरा मतलब है, आप जानते हैं, ये पुनरुत्थान हैं, ये चर्च के भीतर और यहां तक कि व्यापक समाज के भीतर भी सुसमाचारी पुनरुत्थानवादी आंदोलन हैं। तो महान जागृति से मेरा यही मतलब है। ठीक है, मैं दो या तीन का उल्लेख करूँगा।

यहाँ क्या हो रहा है? सबसे पहले, हम जो तारीख बता रहे हैं वह 1734 है। और यह एक महत्वपूर्ण तारीख है। अमेरिकी धार्मिक इतिहास में, यह एक महत्वपूर्ण तारीख है क्योंकि आमतौर पर यह वह तारीख होती है जिसे प्रथम महान जागृति कहा जाता है।

दूसरा महान जागरण 1800 में हुआ था। दूसरे महान जागरण में उत्तरी और दक्षिणी दोनों तरह की अभिव्यक्तियाँ थीं, जो एक बहुत ही दिलचस्प जागरण है, और येल और अन्य जैसे कुछ विश्वविद्यालयों में भी जागरण लाया। ठीक है, अब तीसरा महान जागरण 19वीं सदी के मध्य में है, और चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी, फ़िनी जैसे पुनरुत्थानवादी थे, जिन्होंने उस तीसरे महान जागरण का नेतृत्व किया।

लेकिन मैं इस बारे में इसलिए हिचकिचा रहा हूँ क्योंकि कुछ लोग कहते हैं, नहीं, कोई तीसरी महान जागृति नहीं थी। 1850 के दशक में जो पुनरुत्थान हो रहे थे, वे दूसरी महान जागृति का ही विस्तार थे। इसलिए, अमेरिकी धार्मिक विद्वानों के बीच, आपको इस तरह की बहस देखने को मिलती है कि क्या अमेरिका में तीन महान जागृति हुई थीं या दो महान जागृति हुई थीं।

इस कोर्स के लिए हम उस बहस में जरा भी दिलचस्पी नहीं रखते क्योंकि इस कोर्स के लिए हम 18वीं सदी में ही रहेंगे। हम इस कोर्स के लिए केवल प्रथम महान जागृति पर ही चर्चा करेंगे। अपने अमेरिकी ईसाई धर्म कोर्स में, मैं तीन जागृतियों पर चर्चा करता हूँ, लेकिन इस कोर्स के लिए, हम केवल प्रथम महान जागृति पर ही चर्चा करेंगे और यह भी कि कैसे इसने चर्च में पुनरुत्थान और चर्च में इंजील नवीनीकरण लाया।

तो क्या हम इससे सहमत हैं? लेकिन आपको यह जानना चाहिए कि जब आप महान जागृति, 1734, 1800 और 1850 के बारे में बात करते हैं, तो क्या दो जागृति होती हैं या तीन? या फिर आपको इसकी परवाह भी है? मेरा मतलब है, हमारे लिए, यह मायने नहीं रखता क्योंकि हम पहले महान जागृति पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। क्या आप इससे सहमत हैं? ठीक है, तो अपनी रूपरेखा में नंबर दो को देखें। मैं पहले महान जागृति के चार महत्वपूर्ण नेताओं के बारे में बात करना चाहता हूँ।

तो ये लोग चर्च में पुनरुत्थान और नवीनीकरण ला रहे हैं, और चार लोग थे जो एक तरह से कहानी के लिए महत्वपूर्ण थे। ठीक है, अच्छा। ठीक है, पहला व्यक्ति शायद एक ऐसा नाम है जिससे

आप परिचित नहीं हैं, और उसका नाम थियोडोरस जे. फ्रेलिंगहुइसन था, उच्चारण करने के लिए एक और अच्छा नाम, आप जानते हैं, थियोडोर जे. फ्रेलिंगहुइसन।

फ्रुलिच-हेसेन के बारे में संक्षेप में बात करें तो थियोडोरस जे. फ्रेलिंगहुइसन डच रिफॉर्म चर्च में थे, और वे न्यू जर्सी में डच रिफॉर्म चर्च में थे, और मुझे याद नहीं कि कोई न्यू जर्सी से था या नहीं। नहीं, यहाँ कोई न्यू जर्सी का व्यक्ति है? नहीं, मुझे याद नहीं, क्योंकि न्यू जर्सी में एक फ्रेलिंगहुइसन हाईवे है। इसलिए, देश के उस हिस्से में, न्यू जर्सी के उस हिस्से में, जहाँ से वे थे, वे थियोडोरस जे. फ्रेलिंगहुइसन को हाईवे और अन्य चीज़ों के साथ याद करते हैं, जिनका नाम उनके नाम पर रखा गया है।

लेकिन वह न्यू जर्सी में था, और वह डच रिफॉर्म था। यही उसका संप्रदाय था। इसलिए, वह डच रिफॉर्म था।

अब, संक्षेप में, डच रिफॉर्म चर्च हॉलैंड से आया था और न्यू जर्सी, न्यूयॉर्क क्षेत्र में बस गया था, और वह उसी संप्रदाय से संबंधित है। ठीक है? तो, संक्षेप में, थियोडोरस जे. फ्रेलिंगहुइसन अपने लोगों, अपने डच रिफॉर्म चर्चों में नवीनीकरण लाता है। वह एक बहुत ही उल्लेखनीय प्रकार का घुमंतू उपदेशक था जो चर्च से चर्च जाता था, और उसने उन चर्चों में पुनरुद्धार लाया।

एक बार जब उन्होंने न्यू जर्सी के चर्चों में पुनरुत्थान लाया, तो उन्होंने पेंसिल्वेनिया और मध्य उपनिवेशों, पेंसिल्वेनिया, मैरीलैंड, डेलावेयर और ऐसी ही अन्य जगहों जैसे अन्य उपनिवेशों में भी काम शुरू किया। उनका बहुत बड़ा प्रभाव था। उनका न्यू जर्सी के अन्य प्रेस्बिटेरियन पर भी प्रभाव था।

प्रेस्बिटेरियन पर, अन्य प्रेस्बिटेरियन पर नहीं। लेकिन न्यू जर्सी में प्रेस्बिटेरियन पर उनका प्रभाव था। तो प्रेस्बिटेरियन के साथ एक कहानी है जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे।

लेकिन थियोडोरस जे. फ्रेलिंगहुइसन, अगर आप उन्हें याद करते हैं और उनकी तिथियों को देखते हैं, तो आप उन्हें याद करते हैं, उनकी तिथियों को याद करते हैं, क्योंकि ये लोग जिनके बारे में मैं बात कर रहा हूँ, ये चार लोग एक दूसरे के साथ एक साथ सेवा कर रहे हैं। तो थियोडोर पहले व्यक्ति हैं। हम उन्हें इसलिए चुन रहे हैं क्योंकि वे दूसरों की तुलना में थोड़ा पहले शुरू करते हैं।

ठीक है, मैं गिल्बर्ट टेनेंट का ज़िक्र करता हूँ। और फिर मैंने आपको अभी तक पाँच सेकंड का ब्रेक नहीं दिया है, सोमवार को पाँच सेकंड का ब्रेक। तो, मैं गिल्बर्ट टेनेंट का ज़िक्र करने के बाद ऐसा करूँगा।

आज आपको आराम की ज़रूरत है, है न, सोमवार को बारिश के कारण? मुझे लगता है कि आपको आराम की ज़रूरत है। ठीक है, गिल्बर्ट टेनेंट। वह यहाँ है।

बहुत रोचक है। गिल्बर्ट टेनेंट की तारीखों पर नज़र डालें। ठीक है, गिल्बर्ट टेनेंट के बारे में लंबी कहानी संक्षेप में।

गिल्बर्ट के पिता का नाम विलियम टेनेंट था। तो इसमें एक कहानी है अगर आप कहानी के लिए मेरे साथ बने रहेंगे। लेकिन गिल्बर्ट के पिता का नाम विलियम टेनेंट था।

और विलियम टेनेंट के तीन बेटे थे, और गिल्बर्ट उनमें से एक था। अब, यहाँ लंबी कहानी संक्षेप में यह है कि विलियम टेनेंट एक अच्छे प्रेस्बिटेरियन थे। और उन्होंने अपने बेटों को प्रेस्बिटेरियन चर्च के जीवन में पाला।

वह एक अच्छे प्रेस्बिटेरियन थे। वह इस बात से बहुत दुखी थे कि न्यू जर्सी में जिस प्रेस्बिटेरियन चर्च को वह जानते थे, वह अब लगभग खत्म हो चुका है। यह वह चर्च नहीं था जो अब तक जीवित था।

तो, चर्च काफी हद तक स्थिर हो चुका था। यह पहले जैसा नहीं रहा। और इसलिए उन्होंने 1726 में फैसला किया कि वह अपने बेटों को प्रेस्बिटेरियन मंत्रालय के लिए प्रशिक्षित करेंगे।

वैसे भी यह 18वीं सदी में मंत्रियों को प्रशिक्षित करने के सामान्य तरीके से बिलकुल अलग नहीं था। लेकिन वह अपने बेटों को प्रेस्बिटेरियन मंत्रालय में प्रशिक्षित करने जा रहा था। और 1726 में, उसने अपने बेटों को अपने घर में ले लिया और उन्हें प्रेस्बिटेरियन मंत्रालय के लिए तैयार किया।

जिस व्यक्ति में हम सबसे अधिक रुचि रखते हैं, जिस बेटे में हम सबसे अधिक रुचि रखते हैं, वह गिल्बर्ट टेनेंट है, उसका बेटा गिल्बर्ट। अब, क्या हुआ जब वह उन्हें मंत्रालय के लिए प्रशिक्षित करने के लिए अपने घर ले आया। इस बारे में बहुत मज़ाक उड़ाया गया, इस बारे में बहुत सारी बातें हुईं, और इस बारे में बहुत सारी गपशप हुईं। उनके घर को मज़ाक में लॉग कॉलेज कहा जाता था।

यह एक उपहास का शब्द था क्योंकि वह एक लॉग हाउस में रहता था, जाहिर है। इसलिए वह अपने बच्चों, अपने बेटों को लॉग कॉलेज में प्रेस्बिटेरियन पादरी बनने के लिए प्रशिक्षित कर रहा है, एक तरह का उपहास का शब्द। लेकिन उसे इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

मैं वही कर रहा हूँ जो मुझे लगता है कि मुझे करना चाहिए, और मैं इसे जारी रखूँगा। और यहाँ तक कि अन्य मंत्रियों के साथ भी, मैं इसे जारी रखूँगा। अब उनकी मृत्यु 1764 में हुई, इसलिए वे इतने लंबे समय तक जीवित रहे कि उन्हें अंतिम हंसी मिली क्योंकि वर्ष 1746 में, उनका लॉग कॉलेज प्रिंसटन विश्वविद्यालय बन गया।

तो, विलियम ने उन सभी लोगों पर आखिरी हंसी उड़ाई जो उनके लॉग कॉलेज में प्रेस्बिटेरियन पादरियों को प्रशिक्षित करने के बारे में इतना उपहास करते थे। यह प्रिंसटन विश्वविद्यालय की शुरुआत है, जो दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयों में से एक है। तो यह विलियम टेनेंट और उनके बेटों के साथ है।

कहानी को छोटा करते हुए, अब गिल्बर्ट पर वापस आते हैं। गिल्बर्ट थियोडोरस जे. फ्रेलिंगहुइसन से बहुत प्रभावित थे। गिल्बर्ट एक प्रेस्बिटेरियन पादरी थे।

उन्होंने फ्रेलिंगहुइसन को उपदेश देते हुए सुना, और वे थियोडोरस जे. फ्रेलिंगहुइसन के विश्वासों से बहुत प्रभावित हुए। और उन्होंने फैसला किया, गिल्बर्ट ने फैसला किया, मैं प्रेस्बिटेरियन चर्चों के साथ भी यही करने जा रहा हूँ। मैं प्रेस्बिटेरियन चर्चों में जान डालने की कोशिश करने जा रहा हूँ।

और वह ऐसा काफी सफलतापूर्वक करता है। इसलिए न्यू जर्सी और न्यूयॉर्क और पेनसिल्वेनिया, मिडिल कॉलोनीयों में प्रेस्बिटेरियनिज्म में गिल्बर्ट टेनेंट के नेतृत्व में एक संपूर्ण पुनरुत्थान, एक संपूर्ण नवीनीकरण, एक संपूर्ण पुनरुद्धार आंदोलन है। इसलिए, उसी समय जब फ्रेलिंगहुइसन का पुनरुत्थान हुआ, गिल्बर्ट टेनेंट का भी पुनरुत्थान हुआ; वे समानांतर आंदोलन हैं।

इसलिए, पवित्र आत्मा वास्तव में इन चर्चों को जीवंत करने के लिए काम कर रही है, उच रिफॉर्म चर्च और गिल्बर्ट टेनेंट के साथ प्रेस्बिटेरियन चर्च। मेरे लिए यह दिलचस्प है कि मैंने प्रिंसटन थियोलॉजिकल सेमिनरी से धर्मशास्त्र में मास्टर डिग्री प्राप्त की है। और प्रिंसटन थियोलॉजिकल सेमिनरी के परिसर का एक भाग है, जिसे निश्चित रूप से टेनेंट कैंपस कहा जाता है।

और वे अभी भी टेनेंट कैंपस के लिए पैसे जुटा रहे हैं क्योंकि वे उस नाम को जीवित रखना चाहते हैं क्योंकि प्रिंसटन की स्थापना यहीं हुई थी, जिसमें अंततः एक सेमिनरी के रूप में स्थापित की गई संस्था भी शामिल है। इसलिए, यह देखना दिलचस्प है। मैं प्रेस्बिटेरियन नहीं हूँ, इसलिए जब मैं प्रिंसटन सेमिनरी गया तो मैं इसे एक तरह से बाहर से देख रहा था।

लेकिन गिल्बर्ट टेनेंट या टेनेंट परिवार का नाम, वहां वास्तव में एक सम्मानित नाम है। ठीक है, आपके पास तीसरा नाम है, लेकिन मैंने आपसे पाँच सेकंड का ब्रेक देने का वादा किया था। इसलिए, मुझे नहीं पता कि यह टेपिंग के साथ कैसा है।

क्या यह ठीक है अगर मैं ऐसा करूँ, टेड, अगर मैं पाँच सेकंड का ब्रेक लूँ? पाँच सेकंड सिर्फ तुम्हारे आराम करने, खिंचाव करने, तुम्हें पता है, ब्रेक लेने के लिए। एक, दो, तीन, चार। आज हमारे यहाँ छह सच्चे विश्वासी हैं, इसलिए यह अच्छी बात है।

हमारे पास सिर्फ एक धर्मत्यागी है जिसका नाम नहीं बताया जाएगा, लेकिन छह सच्चे विश्वासी हैं। तो, मुझे उम्मीद है कि आप ठीक हैं। हम बुधवार को व्याख्यान देते हैं, शुक्रवार को व्याख्यान देते हैं, अगले सोमवार और बुधवार को व्याख्यान देते हैं; फिर हम पाठ्यक्रम के आधे रास्ते पर होते हैं।

तो अगले हफ़्ते, हम इस कोर्स का आधा हिस्सा पूरा कर लेंगे। और फिर जब हम वापस आएं, वैसे, और मैं अगले हफ़्ते इसका ज़िक्र करूँगा, मुझे इस बारे में बात करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन जब हम वापस आएं, तो मैंने दूसरी परीक्षा से पहले हमारे सत्रों के लिए शेड्यूल बना लिया है।

तो, हम दूसरी परीक्षा से दो सत्र पहले भी यही करेंगे। वापस आने के बाद इसका असर हम पर बहुत जल्दी पड़ने वाला है। इसलिए पढ़ते और अध्ययन करते रहें।

ठीक है? क्या आप ठीक कर रहे हैं? आप ठीक कर रहे हैं। हम यह कर सकते हैं। ठीक है, नंबर तीन।

आपकी सूची में तीसरा। नहीं, मुझे खेद है। आपकी सूची में c है, आपकी सूची में तीसरा नहीं।

आपकी सूची में c हमारे मित्र जॉर्ज व्हाइटफील्ड हैं। और जॉर्ज व्हाइटफील्ड की तिथियाँ 1714 से 1770 तक हैं। ठीक है, अब जॉर्ज व्हाइटफील्ड।

जॉर्ज व्हाइटफील्ड के बारे में हम क्या कहेंगे? बहुत ही रोचक। वैसे, यह हमेशा सफेद ही होता है। जब भी आप उसका नाम लिखें तो उसमें हमेशा E लिखें।

तो, व्हाइटफील्ड, लेकिन उच्चारण जॉर्ज व्हाइटफील्ड। ठीक है, हम उसके साथ कहाँ जा रहे हैं? वह एंग्लिकन है। वह एक अलग परंपरा से आता है।

वह डच रिफॉर्म नहीं है, वह प्रेस्बिटेरियन नहीं है, और वह इस देश में रहता भी नहीं है। इसलिए, वह एक अलग परंपरा से आता है। वह ब्रिटिश एंग्लिकन है।

अब जॉर्ज व्हाइटफील्ड को ग्रैंड इटिनेरेंट की उपाधि मिल गई है। और इसका कारण यह है कि जॉर्ज व्हाइटफील्ड ने अमेरिका की सात यात्राएँ की थीं। बहुत ही आश्चर्यजनक।

अब, हमें इस बारे में बात करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन जब आप यात्रा करते हैं, तो आप जानते हैं, 18वीं सदी में अमेरिका की सात यात्राएँ करते हुए, आप जानते हैं, आप ब्रिटिश हवाई जहाज़ पर बैठकर बढ़िया डिनर और चाय और स्कोन नहीं खा रहे होते हैं और फिर आराम करके फ़िल्म नहीं देख रहे होते हैं। आप जहाज़ पर सवार हो रहे होते हैं। यह विश्वासघाती है।

यह बहुत कूर है। 18वीं सदी में समुद्र पार यात्रा करना बहुत कूर था। इसलिए, यह कोई आसान काम नहीं है।

इसलिए, उन्हें ग्रैंड इटिनेरेंट कहा जाता था क्योंकि 18वीं शताब्दी में इंग्लैंड से इन तटों तक सात यात्राएँ करना वास्तव में, वास्तव में, वास्तव में, वास्तव में कठिन था। अब, जब वे यहाँ आए, तो जॉर्ज व्हाइटफील्ड, भले ही वे एक एंग्लिकन थे, अपने कॉलर और सब कुछ, जिसमें लबादा और कॉलर भी शामिल थे, में उपदेश देते थे। जॉर्ज व्हाइटफील्ड, जब वे यहाँ आए, तो वे एक पुनरुत्थानवादी थे जिन्होंने संप्रदाय की सीमाओं को पार कर लिया था।

इसलिए, उन्होंने सभी को उपदेश दिया। उन्होंने धर्मातरित और अपरिवर्तित दोनों को उपदेश दिया। इसलिए, वे मेन से जॉर्जिया तक अपनी सात यात्राओं के दौरान लोगों तक पहुँचने के मामले में सबसे महान पुनरुत्थानवादी थे, इस ग्रैंड इटिनेरेंट में।

तो, वह एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति थे, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, उन्होंने महान पुनरुत्थान लाया, लेकिन एक महान पुनरुत्थान जिसने संप्रदाय की सीमाओं को पार कर लिया।

वह अपनी प्रचार शैली में बहुत रुचि रखते थे क्योंकि मैंने हमेशा उनकी तुलना जोनाथन एडवर्ड्स से की है, और हम आगे जोनाथन एडवर्ड्स के बारे में बात करेंगे।

जॉर्ज व्हाइटफील्ड एक आकर्षक व्यक्ति थे। वे ऊपर से आए लोगों में से एक थे, करिश्माई नेता। और वे अक्सर खुले आसमान के नीचे उपदेश देते थे।

उन्हें प्रचार करने के लिए चर्च या इमारतों की ज़रूरत नहीं थी। अक्सर वे खुले आसमान के नीचे, गलियों में, गाँव के हरे-भरे मैदानों में, बोस्टन कॉमन में प्रचार करते थे। और वे एक बहुत ही करिश्माई प्रचारक थे, एक बहुत ही नाटकीय किस्म के प्रचारक।

और किसी ने भी उसे प्रचार करने से नहीं रोका। मेरे पास कुछ तस्वीरें हैं। यहाँ जॉर्ज की खुली हवा में प्रचार करते हुए एक तस्वीर है और जॉर्ज के प्रचार की एक बहुत ही विशिष्ट तस्वीर है।

और वहाँ वह अपने कॉलर और अपने लबादे और अन्य चीजों में खुली हवा में है। यहाँ एक और है। मुझे जॉर्ज की उपदेश देते हुए यह तस्वीर बहुत पसंद है क्योंकि उसे कुछ भी परेशान नहीं करता।

और इसलिए यहाँ वह बोस्टन कॉमन जैसी जगह पर प्रचार कर रहा है, और लोग हॉर्न बजा रहे हैं और ढोल पीट रहे हैं, और कुछ लोग दोषी हैं और उसके पैरों पर बेहोश हो रहे हैं। पेड़ पर बैठा यह आदमी उसे प्रचार बंद करने के लिए तुरही बजा रहा है, लेकिन इससे जॉर्ज को कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि वह बस प्रचार करता रहा। वह अक्सर खुली हवा में प्रचार करता था।

ऐसा कहा जाता है कि बोस्टन कॉमन की तरह, जब वे उपदेश देते थे, तो 8,000 से 10,000 लोग उन्हें सुन सकते थे। अब, यह तब की बात है जब हमारे पास माइक्रोफोन और स्पीकर वगैरह नहीं थे। लेकिन ऐसा कहा जाता है कि 10,000 लोग उन्हें उपदेश देते हुए सुन सकते थे।

वास्तव में, संक्षेप में, जब वह फिलाडेल्फिया में थे, बेंजामिन फ्रैंकलिन, जो जॉर्ज व्हाइटफील्ड के मित्र थे, ने भीड़ का चक्कर लगाया, और बेंजामिन फ्रैंकलिन ने अनुमान लगाया कि उस दिन बेंजामिन फ्रैंकलिन अपनी तरह की वैज्ञानिक जांच कर रहे थे। उन्होंने भीड़ का चक्कर लगाया और अनुमान लगाया कि जॉर्ज व्हाइटफील्ड का उपदेश सुनने वाले लगभग 10,000 लोग थे। तो, जॉर्ज व्हाइटफील्ड कहीं खड़े थे, उपदेश देने के लिए, वह वहीं थे।

जॉर्ज यहाँ दूर से उपदेश दे रहे हैं। और मेरे पास, यह एक लंबी कहानी है, जो इसे संक्षिप्त करती है, मैं इसका कोई भी संबंध बनाने की कोशिश नहीं करता, लेकिन मैंने वास्तव में एक संग्रहालय में जॉर्ज व्हाइटफील्ड का फील्ड पल्पिट देखा है क्योंकि वह हमेशा ऊँची पहाड़ियों या स्टंप पर उपदेश नहीं देते थे। उनके पास अक्सर एक फील्ड पल्पिट होता था।

और यह मैदानी पुलपिट, यह सब ढह गया, और उसने इसका आविष्कार किया। और फिर, जब वह खेतों में या शहर के चौकों में उपदेश दे रहा था, तो उसने इसे बाहर निकाला, उसने इस पुलपिट को खोल दिया। फिर, इसमें कुछ सीढ़ियाँ थीं।

फिर यहाँ एक मंच था जहाँ से वह सभी लोगों को देख सकता था। और यह उसका उपदेश देने के लिए मंच था। और फिर जब वह अपना काम पूरा कर लेता, तो वह बस, सब कुछ ढह जाता और नीचे की ओर मुड़ जाता और साफ-सुथरा हो जाता और आप अपने अगले उपदेश के लिए चले जाते।

लेकिन यह बहुत आश्चर्यजनक है। वास्तव में, टेड और मुझे पता है कि स्टीव हंट और उनकी पत्नी और परिवार के घर के पास एक जगह है जो जॉर्ज व्हाइटफील्ड के उपदेशों का प्रतीक है। मुझे लगता है कि यह वास्तव में इप्सविच लाइन में है या यह रैले लाइन में है।

मुझे याद नहीं कि यह इप्सविच में है या नहीं। यह इप्सविच और रैले के बीच की लाइन पर है। और स्टीव मुझे एक दिन वहाँ ले गया।

मैं इसे देखकर रोमांचित था। क्या आपने इसे देखा है, टेड? मैं इसे देखकर रोमांचित था, वह स्थान जहाँ जॉर्ज व्हाइटफील्ड ने एक बड़ी चट्टान पर उपदेश दिया था। और जॉर्ज व्हाइटफील्ड के उपदेश का एक अच्छा ऐतिहासिक रिकॉर्ड है, जो हमारे ठीक सामने है।

बहुत ही आश्चर्यजनक। जॉर्ज व्हाइटफील्ड एक असाधारण व्यक्ति थे। ठीक है, जाने से पहले एक छोटा सा सवाल।

जॉर्ज व्हाइटफील्ड को कहां दफनाया गया है? उन्हें कहां दफनाया गया है? अंदाजा लगाइए। बस एक अनुमान लगाइए। अंदाजा लगाइए।

इंग्लैंड, यह एक अच्छा अनुमान है। कोई और अनुमान लगाना चाहता है? जॉर्ज व्हाइटफील्ड को कहां दफनाया गया है? उन्हें न्यूबरीपोर्ट, मैसाचुसेट्स में दफनाया गया है, यहाँ से लगभग 10 मील दूर क्योंकि जॉर्ज अपने सातवें प्रचार अभियान पर यहाँ आए थे।

वह मेन में प्रचार कर रहा था। वह बीमार हो गया। वे उसे नीचे ले आए और न्यू हैम्पशायर के एक पादरी के घर में रख दिया।

वह न्यू हैम्पशायर में प्रचार कर रहे थे। वह उन्हें मैसाचुसेट्स ले आए और उन्हें एक चर्च के बगल में पादरी के घर में रख दिया, जिसकी स्थापना में उन्होंने मदद की थी। और वह पादरी के घर में ही मर गए।

और तब उनकी इच्छा थी कि उन्हें पल्पिट के नीचे दफनाया जाए। वह अभी भी वहीं हैं। तो अगर आप अंदर जाएं, तो यह न्यूबरीपोर्ट में एक प्रेस्बिटेरियन चर्च है।

इसलिए, यदि आप न्यूबरीपोर्ट में प्रेस्बिटेरियन चर्च में जाते हैं, चर्च के पीछे, तो आपको जॉर्ज व्हाइटफील्ड के बारे में बहुत सी बातें पता चलेंगी। और फिर, यदि आप उपदेशक से पूछें, तो शायद वह आपको नीचे ले जाएगा और चर्च के पुलपिट के नीचे जॉर्ज व्हाइटफील्ड की कब्र दिखाएगा। तो, जॉर्ज, उसे आशीर्वाद दें, वह यहाँ से बहुत दूर नहीं है।

तो, मेरे अमेरिकी ईसाई धर्म पाठ्यक्रम के लिए, मुझे इसे एक फील्ड ट्रिप के रूप में करना चाहिए। मैंने अभी तक ऐसा नहीं किया है। लेकिन जॉर्ज व्हाइटफील्ड, महान यात्री।

डच रिफॉर्मर्ड प्रेस्बिटेरियन के साथ-साथ, वह अमेरिका में सभी तरह के लोगों में पुनरुत्थान ला रहे हैं। तो वह तीसरे हैं। ठीक है, आपका दिन शुभ हो।

और हम इस सप्ताह बुधवार और शुक्रवार को इस पर व्याख्यान देंगे और इसे जारी रखेंगे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 12 है जर्मनी और अमेरिका में पिएटिज्म पर।